गुरु नानक – सबद ३२

एका माई जुगत विआई तिन चेले परवाण ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

एका माई जुगत विआई तिन चेले परवाण ॥
इक संसारी इक भंडारी इक लाए दीबाण ॥
जिव तिस भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाण ॥
ओह वेखै ओना नदर न आवै बहुता एह विडाण ॥
आदेस तिसै आदेस ॥
आदि अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ॥३०॥

सार: एक ही माँ से जन्मा हर बच्चा समान उपलब्धियों की ओर लक्ष्य रखते हुए व्यक्तित्व प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए, प्रत्येक बच्चा अपनी गति से चलना सीखता है। एक पोषणकर्ता के रूप में, माँ परिणाम प्राप्त करने की विधि या गति के बजाय प्रक्रिया और प्रयास पर ध्यान केंद्रित करती है। इसी तरह, जब लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रकृति के नियमों के अनुरूप उनके अलग अलग तरीक़ों के लिए स्वीकार किया जाता है और महत्व दिया जाता है, तो वह दूसरों की विशिष्टता का सम्मान करने और प्यार करने का साहस प्रदर्शित करते हैं। यह बेहतर दुनिया बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एका माई जुगत विआई तिन चेले परवाण ॥
एकमात्र रचनाकार सृष्टि के रूप में प्रकट होती है, रचनात्मकता के सहयोग से,वह विविध अभिव्यक्तियों के तरीक़ों को अपनाती है।

इक संसारी इक भंडारी इक लाए दीबाण ॥
कुछ सांसारिक दुनिया के कामों में उलझे हुए हैं, कुछ भौतिकवाद में मग्न हैं और कुछ आध्यात्मिक मंडलियाँ आयोजित करते हैं।

जिव तिस भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाण ॥

सृष्टिकर्ता, सर्वव्यापी चेतना प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए अपने हुकुम से अपनी अभिव्यक्तियाँ आयोजित करती है।

ओह वेखै ओना नदर न आवै बहुता एह विडाण ॥

सर्वव्यापी चेतना सब कुछ देखती है, फिर भी उसे देखा नहीं जा सकता; यह सबसे आकर्षक वास्तविकता है।

आदेस तिसै आदेस ॥

प्रकृति के हुकुम का सम्मान करना सार्वभौमिक नियम है।

आदि अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ॥३०॥

अनादि काल, से स्रोत, दोषरहित, अनंत, सर्वव्यापी अदृश्य ऊर्जा एक ही मौलिक इकाई रही है। (३०)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि जीवन देने वाले स्रोत की सर्वव्यापकता मंत्रमुग्ध करने वाली है। दिलचस्प बात यह है कि इसका अस्तित्व अनदेखा है। यह ठोस लेकिन विविध रूपों में प्रकट होकर स्वयं के हर पहलू को देखता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com